

कोकिल करामात (१६६)

देखो देखो री फूलों का बना महलात है
बैठे जामें हैं साईं युगल लिए साथ है॥

जल विहार के दिवस सुहाए हैं
फूलों के महक बहु सुख सरसाए हैं
बरस रही रोम रोम बरसात है॥

साईं की गोद में आनंद अहिलाद है
मन तन प्राणनि में प्रेम उन्माद है
लाड़ भरे अंग अंग अति पुलकात है॥

मधुर मधुर चंदा की चांदनी है छाया रही
शोभा सुहावनी नैनो को भाया रही
बनी रहे यह नित्य मिलन की रात है॥

फूलों के कुंजो की रिमि झिमि है न्यारी
लहरा रही है यमुना महितारी
बनी दरबान सजनी हींअ हुलसात है॥

नित नव मोद विनोद उमंग हैं
चारों ओर छांय रहियो प्रेम रस रंग है
यह लालन लीला या कोकिल करामात है॥